# अजायब बानी

मासिक पत्रिका

फरवरी–2021

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

# अजायब बानी

वर्ष–अठारहवां अंक–दसवां फरवरी–2021

## हुजूर महाराज कृपाल का शुभ जन्मदिवस 6 फरवरी

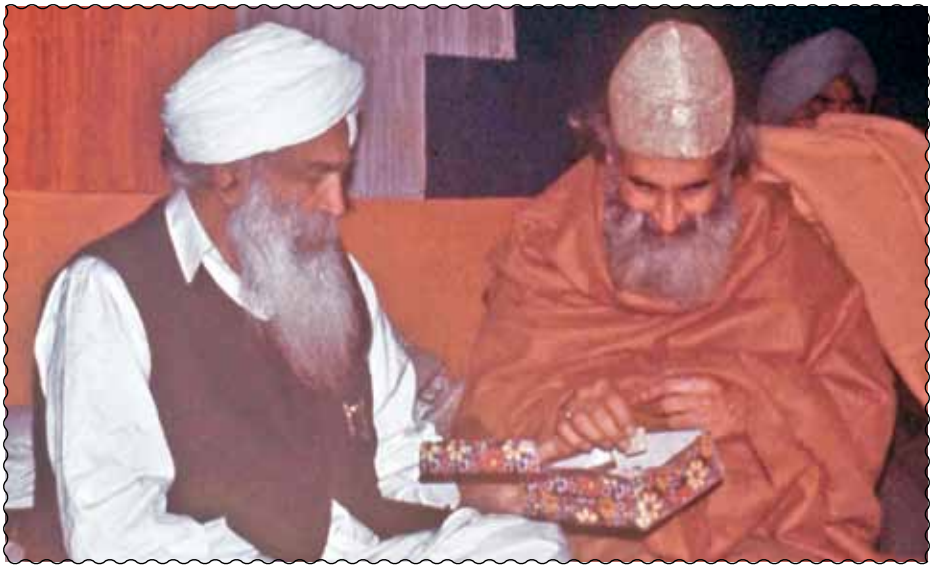

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज 3

गुरु के लिए खुद को बलिदान करें 20

सच्चा शिष्य 23

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, परमजीत सिंह, डॉ.सुखराम सिंह व राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 227 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sector-5 Sri Ganganagar-335 001 (Raj.)

# जोत रब दी है आई

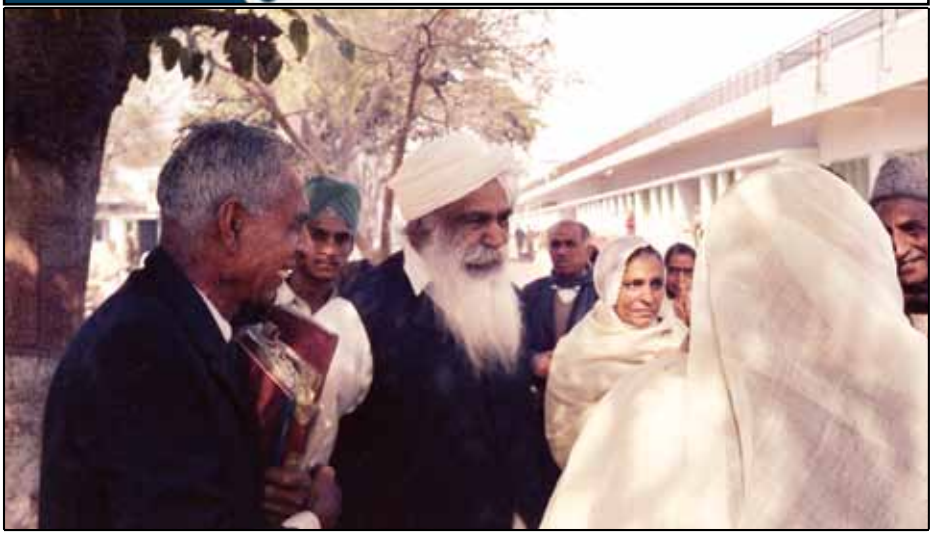

जोत रब दी है आई, सारे देयो जी वधाई,
नी मैं खिड़–खिड़ x 2 हसदी फिरां, ते घर–घर दस्सदी फिरां
आया, सोहणा, मैं घर–घर दस्सदी फिरां, मैं दस्सदी फिरां

अज देवी–देवते मनौंण सारे खुशियां ते परियां शब्द अज गौंदियां x 2
खुशी विच अज सारी दुनियां वधाई देवे घर–घर शगन मनौंदियां,
नी मैं दिल विच, दिल विच हसदी फिरां, ते घर–घर .....

हसुँ–हसुँ करे मुख झलया न जाऐ तेज चेहरे उत्ते चमकां पैंदियां x 2
आया ऐ इलाही नूर जग तो न्यारा बण मिल के सहेलियां कैहंदियां,
नी मैं भज–भज, भज–भज ढकदी फिरां, ते घर–घर .....

पिता ऐ हुक्म सिंह माता ऐ गुलाब देवी घर विच चानण आ गया x 2
नाम कृपाल बण जग ते मिसाल आ 'अजायब' दा हनेरा ठा गया,
16 पी.एस. 16 पी.एस. वसदी फिरां, ते घर–घर .....

# परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

आपके नाम कृपाल का महातम, दया है। आप सोच और कर्म से कृपाल थे। आपकी दया को भुलाया नहीं जा सकता, आप महान थे। आप गुणों से भरपूर थे जो भी आपके संपर्क में आता वह आपकी सादगी और प्रेम से प्रभावित हो जाता था।

आपके मुस्कुराते हुए मुख से निकला हुआ एक शब्द तड़पते हुए प्रेमियों की तरक्की के लिए काफी होता था। आपके शब्द हमारे हृदय पर गहरी दस्तक देते थे। आप समझाया करते थे कि किस तरह जीवन और मौत की पहेली को सुलझाया जा सकता है।

आपकी पहली झलक से ही लगता था कि आप सबसे अलग हैं, आप अपने हृदय की गहराई से बोलते थे। आपके हर शब्द के पीछे आपके जीवन का अनुभव होता था।

एक जाने–माने धार्मिक लीडर को कई बार सावन आश्रम में बोलने के लिए बुलाया जाता था। उसने कहा कि मैं बहुत अच्छी तरह व्याख्या करता हूँ फिर भी लोग प्रभावित नहीं होते लेकिन सन्त कृपाल सिंह जी के कुछ शब्द ही बहुत प्रभावित करते हैं।

सन्तों का अपना अनुभव होता है जबकि व्याख्या करने वालों को ज्यादातर किताबों और दुनियावी साहित्य का ज्ञान होता है।

## बचपन

आपने बचपन में ही स्पष्ट कर दिया था कि आपके कर्म और आचरण आपके आने वाले समय को दर्शाते थे। आप बचपन से ही कई घंटे नदी के ठंडे पानी में खड़े होकर भक्ति करते थे। आपने बहुत कम उम्र में अपने

पिता की नकल करते हुए भगवान शिव की आराधना शुरु कर दी लेकिन आप जो हासिल करना चाहते थे आपको वह नहीं मिला।

बचपन से ही आपका नजरिया बहुत स्पष्ट था। जो कुछ होने वाला होता था वह आपको पहले ही पता चल जाता था। आपकी दूरदर्शिता से प्रभावित होकर आस–पास के लोगों और रिश्तेदारों ने आपको सन्त जी कहना शुरु कर दिया।

आप दूसरे बच्चों की तरह नहीं खेलते थे। अक्सर शान्त रहते, आँखें बंद करके घंटों बिता देते और अंदर के दृश्य देखते हुए एक मंडल से दूसरे मंडल पर जाते। आप सुंदर परियां और दूसरे नजारे भी देखते। आपने अपनी नानी, माँ, बड़े भाई और बड़ी भाभी की मृत्यु की भविष्यवाणी भी की थी। इस सच्चाई से लोग हैरान हो गए और उन्होंने आपको सन्त कहना शुरु कर दिया। आप हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आते। आप अपने शिक्षकों के प्रिय थे और आपके शिक्षकों को आप पर गर्व था।

## सच्चाई की खोज

आप सदा सच की खोज में रहते थे जैसा कि आप स्वयं कहा करते कि आपने स्कूल की लाईब्रेरी में रखी तकरीबन सभी किताबें पढ़ी। आपके स्कूल के जीवन की एक घटना से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि आपमें ज्ञान की प्यास कितनी गहरी थी। एक बार एक ऊँचे पद के पादरी स्कूल में बच्चों से मिलने आए और उन्होंने पढ़ने वाले बच्चों से पूछा, ''वे किसलिए पढ़ रहे हैं?'' बच्चों ने दूरदर्शी लक्ष्य के बारे में उत्तर दिया लेकिन आपने कहा, ''मैं ज्ञान प्राप्त करने के लिए पढ़ रहा हूँ।'' यह सुनकर उस पादरी ने आपके उज्ज्वल भविष्य की भविष्यवाणी की।

सरकारी विभाग में अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए आपको कुछ ही समय हुआ था कि किसी ठेकेदार ने अपना बिल पास करवाने के लिए

आपके मना करने पर भी आपको रिश्वत देने की जबरदस्ती की। आपने मेज पर रखे हुए उन रिश्वत के पैसों को फैंक दिया। आपके आस–पास के लोग आपके इस व्यवहार को देखकर हैरान हुए।

आपके माता–पिता पैसे के मामले को बहुत महत्व देते थे। आपके माता–पिता ने आपको मनाना चाहा कि नौकरी के साथ रिश्वत भी आनी चाहिए। आपने अपने माता–पिता से कहा, ''मैं ईमानदारी से कमाया हुआ सारा पैसा आपके ऊपर न्यौछावर कर दूँगा लेकिन आप मुझसे रिश्वत के पैसों की आशा न करें।''

आपने बचपन से ही अभ्यास करके अपने अंदर दूरदर्शिता उत्पन्न कर ली थी, आप दूसरे का मन पढ़ सकते थे। जब आप बाबा सावन सिंह जी के चरणों में गए तो आपने उनसे वर लिए कि मुझसे किसी का बुरा न हो अगर मैं किसी का अच्छा कर सकूँ तो इसका उसे पता न चले।

## जीवन में सादगी

आपने अपना सारा जीवन सादगी में बिताया। आपने अपनी जरूरतों को कम करके सादा खाना खाया, सादा पहनावा पहना। आपके जीवन में कोई आडंबर नहीं था। आपका व्यवहार प्रेम और नम्रता से भरा हुआ था। आप एक विशिष्ट पद पर अधिकारी रहते हुए सुख भरा जीवन व्यतीत कर सकते थे। ब्रिटिश साम्राज्य में एक हिन्दुस्तानी के लिए इतना ऊँचा पद प्राप्त करना हैरानी की बात थी लेकिन आप हमेशा सादे तरीके से रहे। आप सलवार, लम्बी कमीज और लम्बा कोट पहनते थे।

जो आपसे एक तिहाई कमाते थे वे आपसे बेहतर जीवन जीते थे लेकिन आप अपने परिवार के लिए जितना चिंतित थे उतना ही दूसरों के लिए भी चिंतित थे। आप अपने परिवार के लिए थोड़ी सी कमाई छोड़कर बाकी की कमाई जरुरतमंदों को बाँट देते थे।

आपकी सलवार टखनों से ऊपर होती थी जिस तरह की सलवार इस्लाम के मौलवी पहनते हैं। आपके सादे और जीने के कठोर तरीकों को देखकर कुछ बड़े अधिकारी आपको मौलवी साहब कहकर पुकारते थे। आपके विभाग का सबसे उच्च अधिकारी आप पर बहुत विश्वास करता था, वह आपको विशेष रूप से बहुत मान देता था। आप बिना आज्ञा के कभी भी उससे मिलने जा सकते थे।

## आपके प्रकाशमान स्वरूप का प्रभाव

एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने अपने दूसरे साथियों की बातों में आकर आपके साथ दुर्व्यवहार किया। आपने अपने बचाव में सिर्फ इतना ही कहा कि वह महानुभाव किसी गलतफहमी में है। दफ्तर का काम खत्म करके जब वह अधिकारी अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने बताया कि उसके पेट में बहुत ज्यादा दर्द उठा। उस हालत में उसने सरदार कृपाल सिंह का सन्तमयी रूप देखा जिससे उसे आराम मिला।

उस अंग्रेज अधिकारी को याद आया कि दिन में वह कृपाल सिंह जी के साथ कठोरता से पेश आया था लेकिन कृपाल सिंह जी अंदर से उसकी पत्नी की मदद कर रहे थे। उस अधिकारी ने बड़ी मुश्किल से कृपाल सिंह जी को ढूंढ़ा, अपनी पत्नी को आपके घर ले गया और उसने अपने कठोर व्यवहार के लिए आपसे माफी माँगी। कृपाल सिंह जी ने उनसे कहा कि मैंने इसमें कुछ नहीं किया लेकिन यह हैरानी की बात थी कि उस औरत को उसी समय दर्द से छुटकारा मिल गया। यह बात पूरे ऑफिस में आग की तरह फैल गई।

ऐसी सैंकड़ो घटनाएं हैं जिसमें आपके प्रकाशमान स्वरूप ने ऐसे लोगों को राह दिखाई जो न तो आपको जानते थे न आपसे कभी मिले थे लेकिन जब उन्होंने आपको देखा तो दावा किया कि यह वही दैवीय शक्ति है जिसने कई सालों से दु:ख के समय में उनकी मदद की।

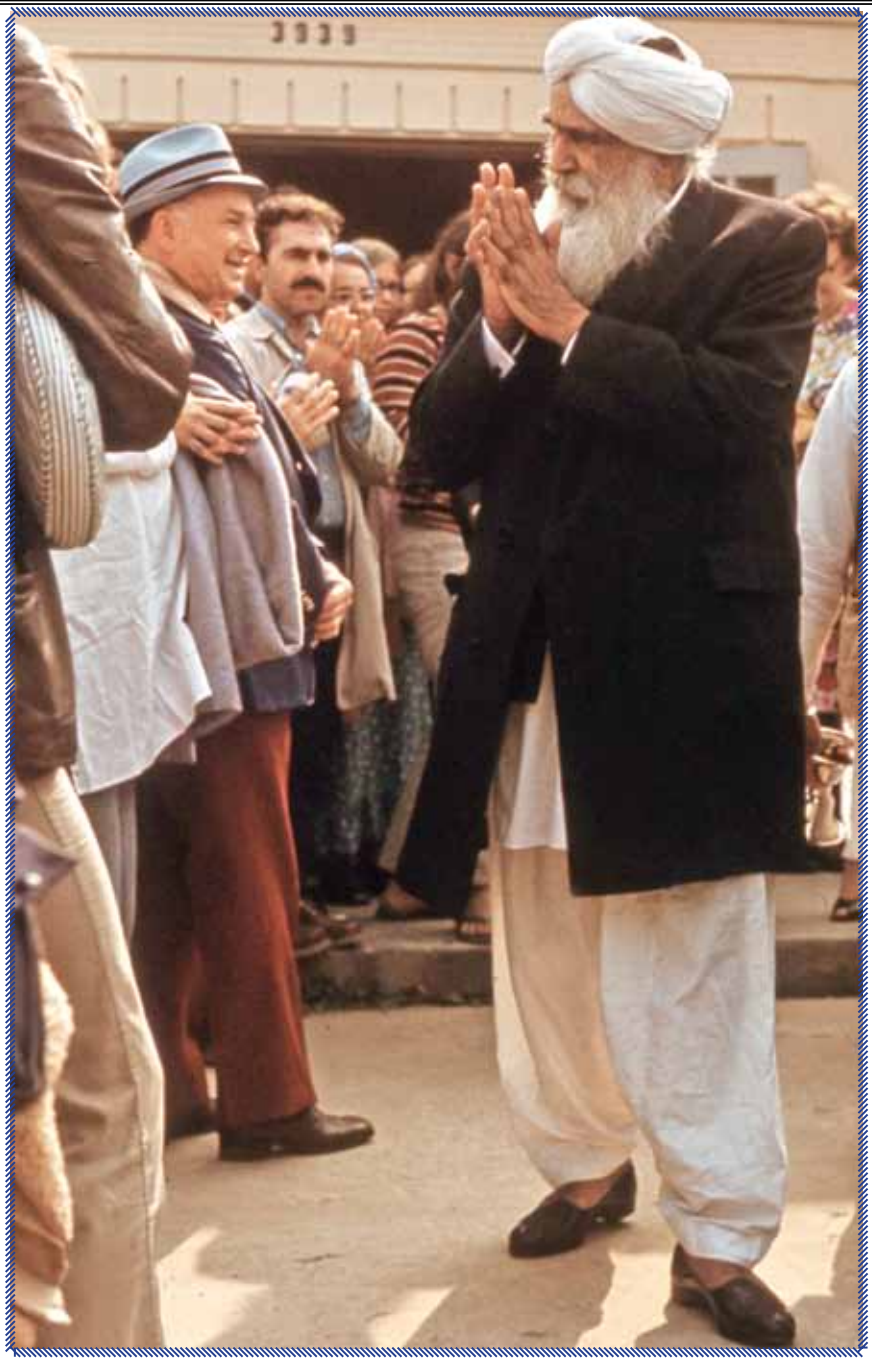

सन् 1960 में शिकागो (अमेरिका) की रहने वाली इस्टेला ब्रुक्स नाम की महिला ने अपने बारे में लिखा कि सन् 1955 में मैं अपने चार बच्चों के साथ शिकागो में रह रही थी। वहाँ पर हमारे पास दूसरी मंजिल पर छह कमरों का घर था। जिसमें एक कमरा इतना छोटा था कि उसमें एक ही पलंग आता था। मैंने अपनी नौं साल की छोटी बेटी को वह कमरा दे दिया। मेरी बेटी हमेशा शिकायत करती कि वह सो नहीं पाती उसे एक आदमी खड़ा हुआ दिखाई देता है। मैं उसे गले से लगाकर सांत्वना देती कि वहाँ कोई नहीं है, परमात्मा उसे देख रहा है।

जैसे–जैसे समय बीतता गया मेरी बेटी ने धैर्य खो दिया और वह उस कमरे में डरने लगी। तब मैंने उस कमरे को पूजा का कमरा बना दिया उसमें बाईबल रखी और यीशू मसीह की फोटो रख दी। मैं रोजाना उस कमरे में मोमबत्ती और धूप जलाती। जब मैं उस कमरे में जाती तो मुझे ईश्वर संबधी प्रेरणा मिलती।

एक दिन मैं उस पूजा वाले कमरे में गई तो वहाँ पर बाईबल के अलावा और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बाईबल के आर–पार एक कागज के टुकड़े पर लिखा हुआ था शान्त खड़ी हो जाओ। जैसे ही मैं कमरे से बाहर निकलने लगी महाराज कृपाल सिंह जी ने अंदर कदम रखा। उस समय मैं डर गई और दरवाजे से बाहर निकलना चाहती थी लेकिन मैं घुटनों के बल जमीन पर गिर पड़ी।

आपने कहा, ''डरो नहीं तुम किसकी सेवा कर रही हो?'' मैंने जवाब दिया कि मैं परमात्मा की सेवा कर रही हूँ। आपने कहा, ''परमात्मा कौन है?'' मैंने कहा परमात्मा आत्मा है। आपने कहा, ''मैं आत्मा हूँ।'' यह कहकर आप ओझल हो गए। कुछ साल बाद मुझे पता चला कि जो इंसान मेरे घर आया था वह परम सन्त कृपाल थे। आज मैं परम सन्त कृपाल सिंह जी की नामलेवा और रूहानी सतसंग की सदस्य भी हूँ।

## इंसानियत की सेवा

आप युवावस्था से ही सबकी सेवा करने में विश्वास रखते थे। आप अस्पतालो में जाकर तन, मन और धन से जरूरतमंदो की सेवा करते। जिस समय देश में महामारी फैली हुई थी उस समय आपने सेवा करने वाली एक पलटन का संगठन किया और हर तरह से जरूरतमंद लोगों की सहायता की। आपके लिए सब आपके अपने थे कोई भी पराया नहीं था।

सन्त सभी को अपने परिवार के सदस्यों जैसा समझते हैं। जब गुरु गोबिंद सिंह जी के चारों बेटों को मुगल साम्राज्य के क्रूर शासको ने शहीद कर दिया तब उन्होंने कहा, ''अगर चार बेटे चले गए तो क्या हुआ अभी हजारों बेटे जिंदा हैं।'' एक बार एक इस्लामिक लीडर जो किसी समागम में भाग लेने आया था उसने कृपाल सिंह जी के बेटे को देखकर पूछा, ''क्या यह आपका बेटा है?'' आपने कहा, ''सभी मेरे बेटे हैं।''

महाराज सावन सिंह भी कहा करते थे कि संगत ही मेरा परिवार है। जब कोई रिश्तेदार आपसे विशेष रूप से मिलने आता तो आप कहते अगर मुझसे कुछ पाना चाहते हैं तो संगत के सदस्यों की तरह मिलने आएं।

## रिटायर होना

आपके रिटायर होने की पार्टी एक कट्टर मुसलमान अधिकारी ने दी जो सिक्खों के खिलाफ था। जब उस अधिकारी से पूछा गया कि उसने एक सिक्ख अधिकारी के लिए पार्टी का आयोजन क्यों किया? उस मुसलमान अधिकारी ने कहा, ''मुझे कारण का तो पता नहीं लेकिन इस सच को ठुकराया नहीं जा सकता कि सरदार कृपाल सिंह एक प्रत्यक्ष आत्मा हैं इसलिए मैं अपने आपको रोक नहीं सका।'' आप सबके साथ एक जैसा व्यवहार करते थे।

इसी मौके पर एक आदमी जिसने आपके साथ सहायक के तौर पर दो दिन पहले ही काम करना शुरू किया था, उसे रोते हुए देखकर सरदार कृपाल सिंह जी ने उससे पूछा कि वह इतना भावुक क्यों हो रहा है? उस आदमी ने कहा कि मुझे आपके साथ ज्यादा समय नहीं मिला। आप एक ऐसे अधिकारी हैं जो कम तनख्वाह वाले सहायकों को इंसान समझते हैं। आप जैसा दूसरा कैसे मिलेगा?

आप बहुत कोमल और प्रेम से भरे हुए थे। आपके पास रोजाना लोग धार्मिक प्रश्न लेकर आते। आप अपने आराम को अनदेखा करके सबसे मिलते जिसका परिणाम कई लोग बहुत मजबूत हो गए। आपने बहुत लोगों की पैसों से भी मदद की। आप अक्सर कहा करते, ''अगर दाँये हाथ से किसी की मदद की जाए तो बाँये हाथ को भी पता नहीं लगना चाहिए।''

फरवरी 1974 में मानव एकता सम्मेलन के समय आपने अपने आश्रम के द्वार सबके लिए खोल दिए। जो भी विदेशी इस सम्मेलन में आने के इच्छुक हैं और यात्रा का खर्च सहन कर सकते हैं वे भारत आ सकते हैं। यह अनुमान लगाया गया कि इस मौके पर बहुत खर्च आएगा। अपनी मर्जी से सेवा देने वालों को बुलाया गया। उस समय आपने अपनी तीन महीने की पेंशन का चैक खजांची को देकर कहा कि यह सम्मेलन में होने वाले खर्च के लिए है। आप अपने जीवन में बहुत नम्र थे।

## सच्चा उपदेश

चाहे किसी विवाह का कार्यक्रम हो चाहे क्रियाक्रम का कार्यक्रम हो आप अपने संपर्क में आए लोगों को यही समझाते कि हमने एक दिन यह शरीर छोड़ना है। चाहे हम इसके लिए तैयार हैं या नहीं तो फिर क्यों न इस अनमोल मौके का फायदा उठाएं और वह करें जो इंसानी जामें के अलावा और किसी जामें में नहीं किया जा सकता। क्यों न हम जरूरतमंदो और

दुखियों की मदद करें? किसी को कुछ देने से हम कुछ खोते नहीं सच तो यह है कि हम परमपिता परमात्मा से उसके बदले में कई गुना ज्यादा पाते हैं। हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। ऐसा करके हम अपने पिता की सच्ची रचना के साथ प्रेम कर रहे हैं।

आप प्रेमियों को सलाह देते कि जिस हद तक मुमकिन हो अपनी दौलत और ज्ञान दूसरों के साथ बाँटें। आपके लिए दिन–रात, सुबह–शाम, दूर–नजदीक, पढ़ा लिखा–अनपढ़, दोस्त–दुश्मन, औरत–मर्द का कोई फर्क नहीं पड़ता था। आप हर समय सबकी मदद के लिए तैयार रहते थे। आप हमेशा अपनी सारी संपत्ति बाँटने के लिए तैयार रहते थे क्योंकि आपका मानना था कि ऐसा करने से हम अपने परमपिता की सच्ची रचना से प्रेम कर रहे हैं। चाहे हम किसी भी रूप में किसी की मदद करें हमें ईनाम की इच्छा नहीं रखनी चाहिए।

दुनिया का अपना तरीका है। अक्सर लोग ज्यादातर उनकी मदद के लिए तैयार रहते हैं जो पहले से ही अमीर हैं। आप जरूरतमंदों की मदद करें और ख्याल रखें कि आप जिसकी मदद कर रहे हैं उसमें यह भावना नहीं आनी चाहिए कि मुझे कोई दे रहा है।

एक बार एक अखबार का रिर्पोटर आपसे मिलने सावन आश्रम आया। रिर्पोटर की यह सोच थी कि आप बहुत खर्चीला जीवन जीते हैं। आपने उसकी तरफ ध्यान देकर कहा कि मैं बहुत साधारण तरीके का जीवन जीता हूँ। हो सकता है आपका खर्च मुझसे ज्यादा हो! आप आस–पास जो व्यवस्था देख रहे हैं यह बाहर से आने वाले लोगों के लिए है जिन्हें मैं सुखी देखना चाहता हूँ।

सन् 1946 में एक त्यागी साधु लाहौर में आपके घर आया। उस समय आपकी पत्नी मायके गई हुई थी और आप घर पर अकेले थे। आपने साधु से पूछा कि आप रात के खाने में क्या लेंगे? साधु ने जवाब दिया, ''मैं परमात्मा

की रजा में खुश हूँ और मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' आपको भी कुछ नहीं चाहिए था। ऐसा कहने के बाद दोनों ने आपस में कई धार्मिक तत्त्वों पर विचार किया। वह साधु उसी कमरे में सो गया। आप तीन घंटे तक कुछ लिखते रहे उसके बाद आप सो गए और सुबह जल्दी उठकर अभ्यास में बैठ गए।

अगले दिन सुबह आपने उस साधु से पूछा कि उसे नाश्ते में क्या चाहिए? साधु ने वही बात दोहराई जो उसने पहले दोहराई थी। आपने साधु से कुछ देर बात की और आफिस चले गए। साधु ने कहा कि वह शाम को फिर आएगा। शाम को फिर वही बात हुई दोनो ने खाना नहीं खाया। अगली सुबह फिर यही हुआ। आप आफिस चले गए, साधु कहीं और चला गया और शाम को वापिस लौट आया।

तीसरे दिन जब आप अपने घर आए तो साधु पहले से ही आया हुआ था तब आपने साधु से खाने के लिए पूछा तो साधु ने थकी आवाज में कहा कि आपको कुछ चाहिए या नहीं लेकिन मुझे जरूर खाने के लिए कुछ चाहिए क्योंकि और भूख सहना मेरे बस में नहीं है। मुझे पता नहीं कि आप किस चीज के बने हैं बिना कुछ खाए सारा दिन आफिस में काम करते हैं बाकी समय अभ्यास में लगाते हैं।

साधु ने कहा मुझे लगा शायद आप आफिस में खाना खाते होंगे लेकिन आज मैं आपके आफिस में गया था तो मुझे पता लगा कि आप हमेशा की तरह पानी के अलावा कुछ नहीं लेते। आप इतना लम्बा समय बिना खाना खाए कैसे रहते हैं? यह मेरे लिए कठिन परीक्षा थी। मैं आपको प्रभावित करने के लिए भूखा रहा। आप साधु के लिए खाना लाए और कहा, ''नाम पावर ही सबसे बड़ा खाना है।'' वह साधु आपसे बहुत प्रभावित हुआ और उसने आपसे माफी माँगी।

लाहौर की रहने वाली एक बुजुर्ग माता बहुत अच्छी अभ्यासी थी, उसे आपके साथ बहुत लगाव था। वह माता अपने घर से बहुत लम्बा रास्ता तय करके आपसे मिलने जाती। अगर वह कई दिनों तक आपसे मिलने न जा पाती तो वह आपकी याद में अभ्यास में बैठ जाती और आप अपने आप उससे मिलने चले जाते।

एक बार ऐसा हुआ कि वह माता कुछ दुनियावी कामों से निराश होकर उदास मन से अभ्यास में बैठ गई। उस समय दोपहर का समय था आप अपने आफिस से साईकिल चलाकर गर्मी में उस माता से मिलने गए और आपने कहा, ''अभ्यास में बैठकर याद करने से पहले समय और हालात का जायजा ले लिया करें।''

एक बार आप अमृतसर टूर पर गए। उस समय आपने पँजाब में कुछ जगह जाने के बाद उत्तर प्रदेश में भी कई जगह जाना था। अमृतसर पहुँचने पर आपको अचानक अपना कार्यक्रम बदलना पड़ा। एक प्रेमी अभ्यास में बैठकर लगातार आपको याद कर रहा था इसलिए आपको उसके पास जाना पड़ा। गुरु जानता है कि प्रेम की आग कहाँ जल रही है। गुरु अपने तय कार्यक्रम और आराम की परवाह किए बिना अपने शिष्य के पास पहुँचता है।

आपके शिष्य ही नहीं बल्कि बहुत बड़े राजनीतिज्ञ और सामाजिक लोग जो भी आपके संपर्क में आए वे आपका प्रभाव महसूस किए बिना नहीं रह सके। आपने औरत–मर्द, लड़का–लड़की, गरीब–अमीर, छोटे–बड़े सबको एक समान प्यार दिया। जो लोग आपको मारना चाहते थे आपने उन्हें भी वही प्यार दिया क्योंकि आप प्यार ही देना जानते थे।

अप्रैल 1974 हरिद्वार में कुंभ मेले के अवसर पर आपने सभी धर्मों के मुखियाओं की सभा आयोजित की। इस मौके पर हिन्दु धर्म के एक मंडलेश्वर ने व्याख्या की कि वेदों, पुराणों, शास्त्रों और धर्मपुस्तकों में जो

लिखा है वह बहुत सराहनीय है। आपने उसकी पीठ थपथपाकर पूछा क्या यह आपका अपना अनुभव है? उसने कहा कि इसमें मेरा अपना कोई अनुभव नहीं यह सब सिद्धान्तों और किताबों का ज्ञान है। आपने उस महानुभाव की तारीफ की कि उसने इतने सारे धार्मिक लीडरों के सामने सच मानने की ईमानदारी दिखाई।

आप अक्सर यही सलाह दिया करते थे कि जिन्होंने इस इंसानी जामें की प्रयोगशाला में सच को प्रत्यक्ष नहीं देखा उन पर भरोसा न करें। जिन्होंने खुद परमात्मा को नहीं देखा वे दूसरों को किस तरह परमात्मा दिखा सकते हैं?

## अधूरे गुरु का डर

आपको बचपन से ही अधूरे गुरुओं का डर था। आप कहा करते थे अगर कोई पढ़े–लिखे व्यक्ति के साथ बैठेगा तो वह उसके दिखाए गए रास्ते पर चलकर ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अगर कोई जीवन भर भी किसी अनपढ़ के साथ रहेगा तो भी वह पढ़ा–लिखा नहीं बन सकता। जिसने इस इंसानी जामें में सच को प्रत्यक्ष कर लिया हो उसे किसी किताबी ज्ञान की जरूरत नहीं।

आप अक्सर शेख शादी की मिसाल देकर समझाया करते थे कि जिसने स्वयं अपने जीवन की पहेली सुलझाई हो, जो मेहनत करके पहलवान बना हो वही दूसरों को पहलवान बनाने में मदद कर सकता है।

## मौत का रहस्य

आप बताया करते थे कि मैंने अपनी जिंदगी की शुरूआत में एक जवान औरत को मरते हुए देखा। उसके रिश्तेदार मृतक शरीर को श्मशान घाट लेकर गए। एक बूढ़े का शरीर भी श्मशान घाट में आग की लपटों के हवाले करने के लिए लाया गया। आपने देखा कि उन दोनों मृतक शरीरों में से कुछ निकल गया है जो आपके शरीर के अंदर अभी भी था। यह वह है जो

जीवित को मृत बनाता है। आपने कारण ढूंढ़ने की बहुत कोशिश की कि ऐसा क्या है जिसने इन्हें मृत बना दिया है?

यह प्रश्न आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण था लेकिन आपको कहीं भी संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। आपके अंदर इस सच को खोजने की इच्छा बढ़ती चली गई। इस गहरी सोच के दौरान आप कई जगह गए लेकिन अधूरे गुरुओं ने आपको रीति–रिवाजों और सिद्धान्तों का हवाला दिया।

परमपिता परमात्मा आप जैसी इच्छुक आत्मा की याचना को नकार नहीं सका और आपको एक पवित्र आत्मा के पास ले गया जो परमात्मा से जुड़ी हुई थी और आपको रास्ता दिखा सकती थी। परमात्मा ने आपकी आध्यात्मिक इच्छा को बाबा सावन सिंह जी के संपर्क में लाने की व्यवस्था की। बाबा सावन सिंह जी ब्यास दरिया के किनारे नाम की दौलत मुफ्त बाँट रहे थे।

उस समय राधास्वामी नाम पर दुनियादारों के विचार अच्छे नहीं थे। धार्मिक और हठधर्मियों ने बाबा सावन सिंह जी के धार्मिक नाम को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जो प्रेमी सच की खोज में बाबा सावन सिंह जी के संपर्क में आए उन्होंने बहुत तृप्ति महसूस की और उनका विश्वास बढ़ता चला गया।

सन्त कृपाल सिंह जी को दरिया देखने का बहुत शौक था। आपने ब्यास स्टेशन पर उतरकर स्टेशन मास्टर से पूछा, ''ब्यास दरिया को कौन सा रास्ता जाता है?'' स्टेशन मास्टर ने कहा, ''क्या आप सन्तों से मिलने आए हैं?'' आपने कहा एक पंथ दो काज, चलो सन्तों के दर्शन भी हो जाएंगे। जब आप डेरा ब्यास पहुँचे और आपको बाबा सावन सिंह जी के दर्शन हुए कि यह वही स्वरूप है जो सात साल से मेरे अंदर आ रहा है, मुझे रास्ता दिखा रहा है। आपने बाबा सावन सिंह जी से कहा, ''आपने मिलने में इतनी देर क्यों लगा दी?'' बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''मिलने का यही वक्त तय था।''

भक्ति किसी खास व्यक्ति या किसी परिवार के साथ बंधी हुई नहीं होती। भक्ति काबलियत रखने वालों के पास जाती है। भक्ति किसी भी शारीरिक या मानसिक नियम से ताल्लुक नहीं रखती।

## सावन और कृपाल

बाबा सावन सिंह जी ज्यादा उन्नति करने वाले शिष्यों में आपका नाम लिया करते थे। आप हमेशा पर्दे के पीछे रहना पसंद करते, सतसंग में पीछे बैठते। आप धनी लोगों के संपर्क से बचते। आपका पूरा जीवन प्यार और त्याग से भरा हुआ था। इंसानी जामा जल्दी या देर से नष्ट हो जाएगा। आपने बुढ़ापे और गिरती हुई सेहत के समय अपना जीवन इंसानियत की सेवा में लगाया। आप दिन भर लम्बे उपदेश के बाद भी अपने सारे अधूरे काम पूरे करने के बाद ही सोते थे। आप अक्सर कहा करते कि हमें यह आदत बना लेनी चाहिए कि हम सोने से पहले अपने सारे काम खत्म कर लें। आपने सारा जीवन इस नियम का पालन किया।

जब आप लाहौर में नौकरी करते थे उस समय आपकी दिनचर्या में आपके आफिस जाने से पहले दुखी और पीड़ित लोग सुबह जल्दी आपके घर आ जाते और शाम को आफिस से आने के बाद भी यही होता था। आपके दफ्तर का कार्य भी बहुत बोझ और जिम्मेवारी वाला था। आपके पास जगह–जगह सतसंग देने की भी जिम्मेवारी थी इसके अलावा आप दुखी और पीड़ितों से भी मिलने जाते थे।

लोग आपको अपना गुरु भाई समझते थे। जो भी आपके पास आता आप उससे प्यार करते और उसकी मदद करते। दुर्भाग्य है कि उन्हीं लोगों ने बाबा सावन सिंह जी के शरीर छोड़ने के बाद संगत में यह बात फैलाई कि आपको नामदान देने का अधिकार नहीं। बहुत कम लोग ही समझते हैं

कि अधिकार हवा में नहीं उगता यह तो उस पेड़ का फल है जो गुरु की आज्ञा मानने से जमीन में उगता है।

जब गुरु नानकदेव जी ने लैहणा को मुर्दा खाने के लिए कहा तो वह घबराया नहीं जबकि उनके बेटों ने उसे खाने से मना कर दिया। गुरु की आज्ञा मानने से भाई लैहणा के लिए वह मुर्दा मीठे प्रशाद में बदल गया।

उसी तरह गुरु अमरदेव जी ने भी अपने प्यारों को चबूतरे बनाने का हुक्म दिया। रामदास के अलावा बाकी गुरु भाईयों ने बार–बार चबूतरे बनाने से यह कहकर इंकार कर दिया कि अब ये बूढ़े हो गए हैं इनका दिमाग ठीक नहीं। उस समय रामदास जी ने उदास होकर कहा, ''अगर गुरु का दिमाग ठीक नहीं तो किसका दिमाग ठीक हो सकता है।''

इतिहास गवाह है कि पूर्ण गुरु के शारीरिक रूप से दुनिया से जाने के बाद पद प्राप्ति के लिए इस तरह की स्थिति पैदा हो जाती है कि दावा करने वालों के पास नाम के खजाने को छोड़कर बड़ी–बड़ी कचहरियों की व्यवस्था हो जाती है।

चौथे गुरु रामदास जी के समय में भी इसी तरह हुआ कि उनका बड़ा बेटा पृथ्वीचंद लंगर और संगत का सारा काम देखता था लेकिन उसने गुरु की आज्ञा को नहीं समझा, वह गुरु की संपत्ति पर नजर रखता था। गुरु रामदास जी ने परमार्थ का काम अपने छोटे बेटे अर्जुनदेव जी को सौंपा। अर्जुनदेव जी अपने पिता को परमात्मा रूप मानते थे और उनकी आज्ञा का पालन करते थे।

जब गुरु रामदास जी ने पृथ्वीचंद को धार्मिक कार्य नहीं सौंपा तो वह चिड़चिड़ा हो गया और उसने अर्जुनदेव जी को नीचा दिखाने के लिए सब कुछ ही किया। पृथ्वीचंद ने चाल चली तो उस समय के मुगल बादशाहो ने अर्जुनदेव जी को बहुत कष्ट दिए। इस पर गुरु ग्रंथ साहब में रामदास जी

ने अपने बेटे के लिए कुछ लाईनें लिखी जो गुरु ग्रंथ साहब के पन्ना–1200 मौहल्ला चौथा में अंकित हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं, ''बेटा! बाप के साथ झगड़ा करना ठीक नहीं क्योंकि यह मेरा नहीं धुर दरगाह से परमात्मा का फैसला है। तुम्हें जिस दौलत का घमंड है यह किसी समय भी जा सकती है अगर तुमने पिता को गुरु परमात्मा समझा होता तो तुम झगड़ा नहीं करते।''

## खर्चीलापन

कई प्रेमियों ने आपकी महानता आपके गुरु सावन सिंह जी के समय में देखी थी। आप गुरु की दी हुई दौलत को खुले दिल से बाँटा करते थे, उस समय सच के खोजी दूर–दूर से बड़ी संख्या में आपके पास आते थे। आप अपने आराम की परवाह किए बिना गुरु से मिलने आए प्रेमियों की जरूरतों को देखते हुए खर्चीली सेवाएं देना पसंद नहीं करते थे।

आमतौर पर देखा गया है कि जब तक सेवाएं सादी रहती हैं तब तक आने वाले प्रेमी पवित्र जगह पर भक्ति से पूरा फायदा उठाते हैं लेकिन जब आराम और सुविधा को ज्यादा महत्व दिया जाता है तो उत्सुकता कम हो जाती है। जो प्रेमी बाबा सावन सिंह जी के आश्रम ब्यास गए हैं उन्हें याद होगा कि वहाँ का जीवन बहुत प्यारा और उमंग भरा था। उस समय प्रेमियों को जमीन पर सोना पड़ता था, वहाँ बिजली और अच्छे स्नानघर भी नहीं थे। जब सुविधाएं बढ़ने लगी तो आने वाले प्रेमियों का ध्यान दूसरी तरफ बँट गया।

जब तक सन्त अपने आप संभालने में समर्थ होते हैं तब तक वे सादगी के वातावरण को खत्म नहीं होने देते लेकिन जैसे–जैसे मिशन बड़ा होता जाता है तब व्यवस्था को भी बड़ा करना पड़ता है।

सन्त हमेशा सादगी में रहते हैं और अपने शिष्यों को भी सादगी में रहने की सलाह देते हैं लेकिन जब हम सन्तों के लिए और मुश्किलें पैदा कर देते हैं तब उनके लिए असहनीय हो जाता है और सन्त अपने निश्चित समय से पहले ही जाना तय कर लेते हैं। ***

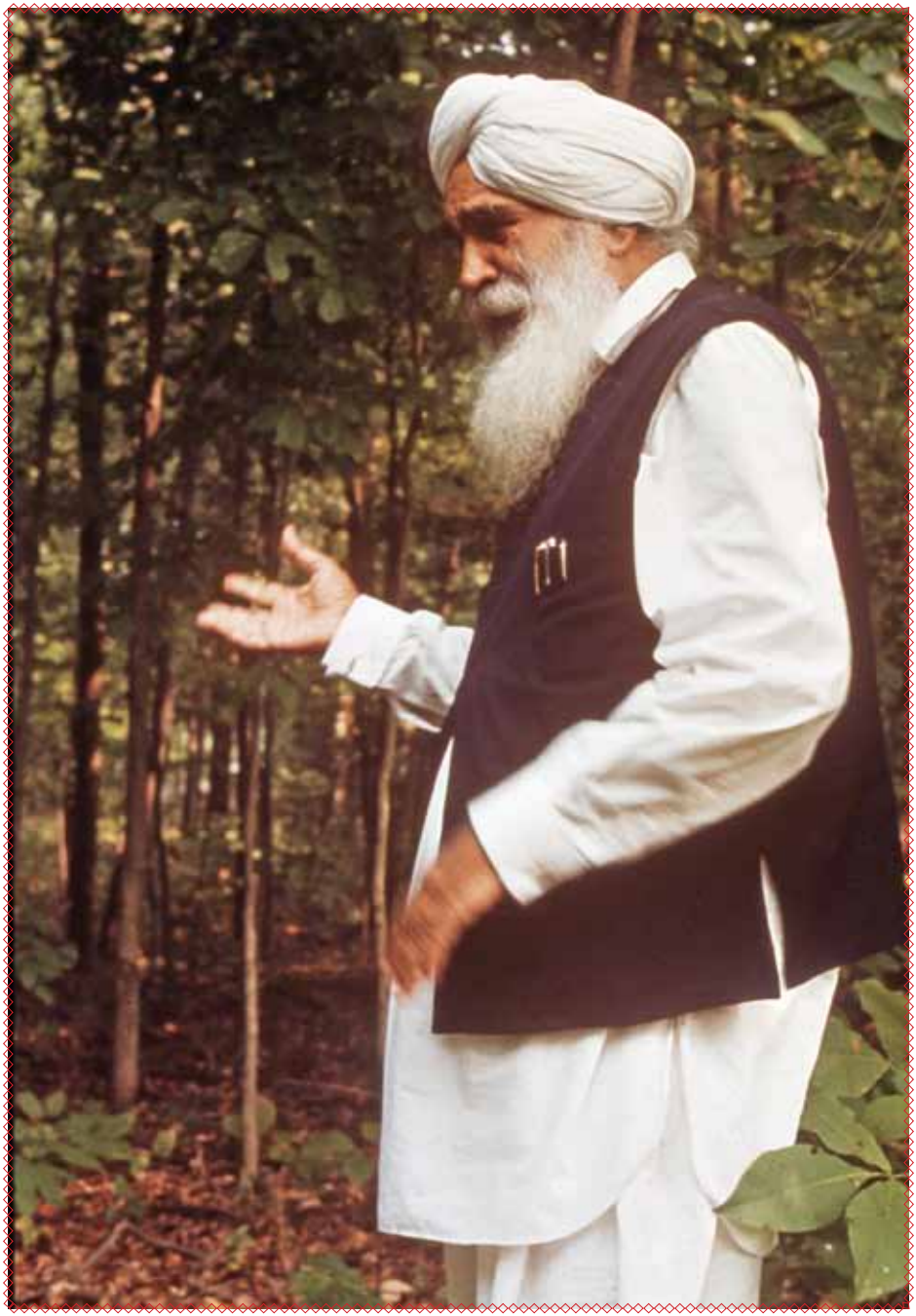

29 फरवरी 1984

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सवालों के जवाब

# गुरु के लिए खुद को बलिदान करें

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

***एक प्रेमी:*** *गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मैं दिन में सौ बार अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ। आप हमें बताएं कि हम किस तरह अपने गुरु पर बलिहार जा सकते हैं?*

***बाबा जी:*** आप वह करें जो गुरु आपको करने के लिए कहता है फिर दिन में सौ बार गुरु पर बलिहार जाने का क्या सवाल है। आप अपना तन, मन, धन सब कुछ गुरु के हवाले कर दें। लेकिन क्या होता है? आप अपने धन को गुरु पर समर्पित कर देते हैं। शायद! ही कोई ऐसा भाग्यशाली मिलेगा जो अपना मन गुरु के चरणों में समर्पित कर दे। जो अपने मन को गुरु के चरणों में समर्पित कर देता है उसकी सब समस्याएं दूर हो जाती हैं क्योंकि बुराई मन में है।

पत्नी अपना शरीर पति को समर्पित कर देती है लेकिन वह अपने मन का समर्पण नहीं करती। उसी तरह हम गुरु को अपना शरीर समर्पित कर देते हैं लेकिन मन समर्पित नहीं करते इसलिए हम गुरु से लाभ नहीं उठा पाते। इस मार्ग पर जिसने भी कुछ हासिल किया है उसने अपने आपको गुरु पर बलिदान करके ही प्राप्त किया है लेकिन हमारा मन हमारे और गुरु के बीच दीवार बनकर खड़ा हो जाता है।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि आपको पूर्ण गुरु द्वारा लिखे गए भजन गाने चाहिए। पूर्ण गुरु द्वारा लिखे गए भजनों के पीछे गुरु का त्याग और तड़प काम कर रहा होता है, जिससे हमें बहुत मदद मिलती है।

आपने गुरु नानकदेव जी के बारे में पूछा है कि गुरु नानकदेव जी ने अपने गुरु के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया था। गुरु नानकदेव

जी ने महसूस किया था कि गुरु वह शक्ति है जो एक पल में किसी को भी परमात्मा बना सकती है।

अगर हम सन्त और सतगुरुओं का इतिहास पढ़ें तो हम महसूस करेंगे कि उनके बलिदान के कारण ही वे भक्ति मार्ग पर कामयाब हुए और गुरु सब बरकतें लेकर उनके अंदर बैठ जाता है। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि जब तक आप दसवें द्वार तक नहीं पहुँच जाते तब तक आपको कोई आध्यात्मिक भजन नहीं लिखना चाहिए।

गुरु नानकदेव जी ने ग्यारह साल कंकड़–पत्थरों का बिछौना किया, भूख–प्यास काटी और खुद को अपने गुरु पर बलिदान कर दिया। तभी आपको सर्वशक्तिमान परमात्मा का अहसास हुआ। आपने दुनिया के ताने–मेहणें सहन किए। कई लोगों ने आपको भूत कहा और भला–बुरा कहा। इतना कुछ सहने के बाद भी आपने यही कहा कि मैं यह सब इसलिए बर्दाश्त कर सका क्योंकि मैंने गुरु की शरण ली और गुरु ने मुझ पर दया की। आप अपनी बानी में लिखते हैं:

***कहो नानक मैं नीच कर्मां, शरण पड़े की राखो शरमा।***

हे परमात्मा! मैंने पिछले कई जन्मों में बहुत रीति–रिवाज और कर्मकांड किए लेकिन मैं आपको प्राप्त नहीं कर सका। मैं गरीब, नीचकर्मों वाला था, मुझे मालूम नहीं था कि सेवा कैसे की जाती है। मैं बहुत मतलबी हूँ आप मुझे अपने चरणों में रखें, मेरी लाज रखें।

एक बार एक पश्चिमी प्रेमी ने बाबा सावन सिंह जी से नामदान लिया और अगले दिन ही उसने सावन सिंह जी को लिखा कि उसे कोई अनुभव नहीं हो रहा कोई तरक्की नहीं हो रही। महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि पश्चिम के लोग बहुत जल्दबाजी करते हैं। वे कड़ी मेहनत के बिना ही फल की आशा रखते हैं, उन्हें चाहिए वे मेहनत करें।

***

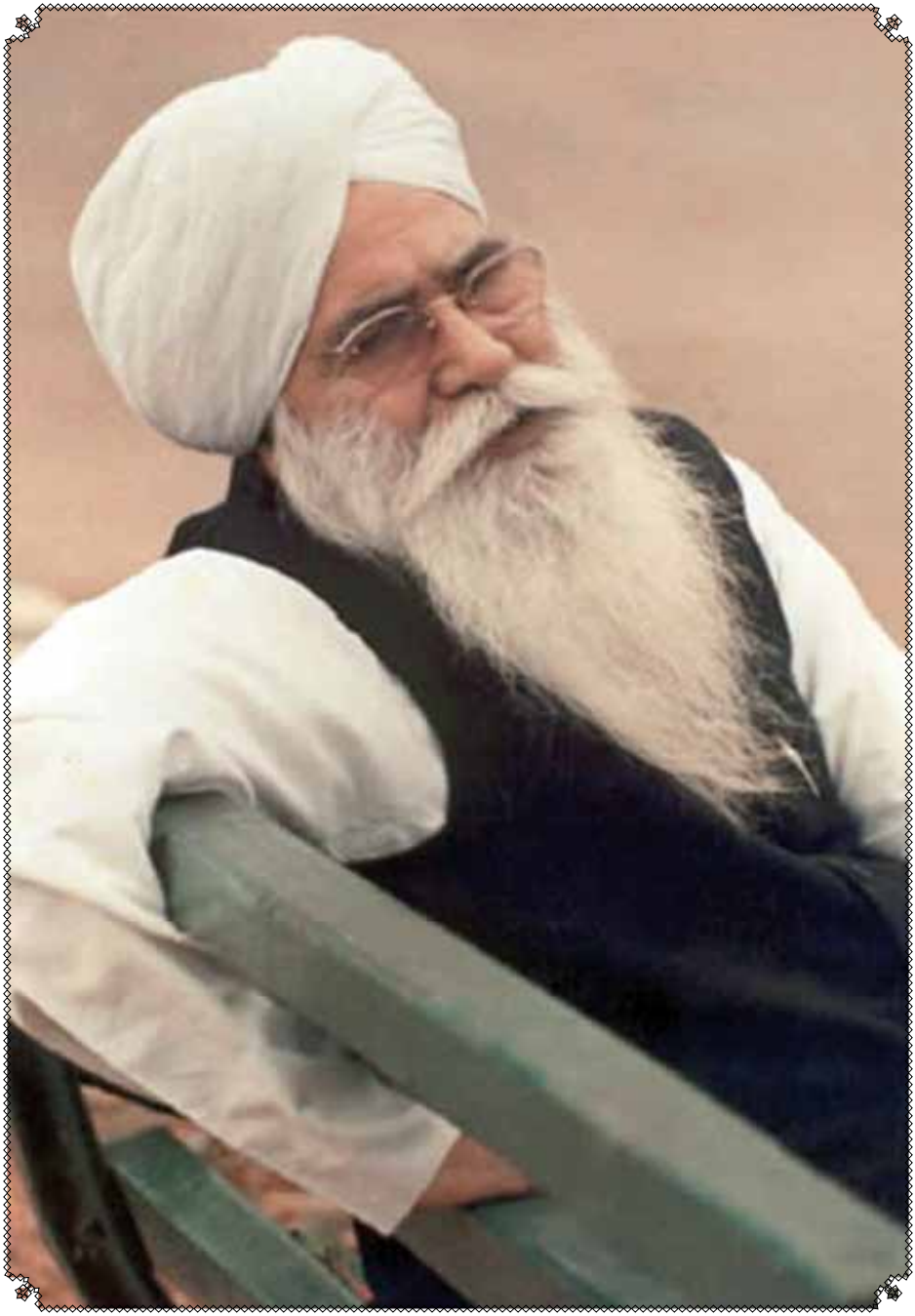

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

01 मार्च 1988

# सच्चा शिष्य

DVD. 538 (1)

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

आपके आगे गुरु नानकदेव जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। यह उस समय का प्रसंग है जब गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा को योग्य समझकर अपनी जगह नामदान देने का अधिकार बख्श दिया और अपने अंग के साथ लगाकर उसका नाम भी तब्दील कर दिया कि तू अंगद है, मेरे अंग से लगा है।

उस वक्त गुरु नानकदेव जी की धर्मपत्नी ने सवाल किए कि आपने यह ठीक नहीं किया अपने पुत्रों को छोड़कर उपदेश देने के काम के लिए उसे मुकर्र किया है जो कल ही आया है और नौकरों की तरह घर का काम करता है। गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में दो तुकों के अंदर बहुत प्यार से समझा रहे हैं। सन्त–महात्माओं के समझाने का अपना ही तरीका होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा था:

***सन्त समूह अनेक मति के।***

सन्तों के समझाने का तरीका बहुत सरल होता है। अखाड़े में बहुत से पहलवान उतरते हैं लेकिन जीत का सेहरा उन्हीं को मिलता है जिनके कर्मों में भगवान की तरफ से लिखा होता है या जिन्होंने तन–मन के साथ कसरत करके अपने शरीर को मजबूत बनाया होता है। कई देखा–देखी भी पहलवान बन जाते हैं लेकिन जब दूसरे पहलवान के साथ हाथ मिलता है तो वे अपने शरीर के अंग भी तुड़वा बैठते हैं और दूसरे लोगों को मजाक करने का मौका मिल जाता है।

मेरे पिछले गाँव का वाक्या है कि वहाँ का एक आदमी रोज ही अपने शरीर पर तेल लगाकर मालिश कर लेता था। उसका पिता लोगों से तारीफ

करता कि मेरा लड़का बहुत पहलवान है, वह रोज शरीर पर तेल की मालिश करवाता है। हमारे गाँव में थोड़े से पहलवान आकर कुश्ती करने लगे। जिसने घर में रहकर शरीर पर तेल लगाया हुआ था वह कभी मैदान में नहीं उतरा था और उसे दूसरे आदमी के जोर का पता नहीं था; उसने झंडी बाँध दी कि मैं सबसे तगड़ा पहलवान हूँ। गाँव हांसलिया के एक जमींदार ने उसकी झंडी पकड़ी वह जमींदार कभी भी अखाड़े में नहीं उतरा था और न ही उसने कभी कुश्ती की थी लेकिन उसके पास जोर था, हिम्मत थी। उसने उसे पकड़कर जमीन पर ऐसा मारा कि हमें उसके मुँह में पानी डालकर उसे उठाना पड़ा। अभी भी लोग उस पर हँसते हैं, उसका मजाक उड़ाते हैं कि यह पहलवान है; उसका नाम ही पहलवान रखा हुआ है।

प्यारेयो! यह तो एक दुनियावी कहानी है लेकिन सच्चाई यह है कि हम सारे ही भक्ति के अखाड़े में भक्ति करने के लिए उतरे हुए हैं। इसमें कोई शक नहीं कि हम सबके अंदर चाव भी है और तड़प भी है लेकिन कामयाब वही होता है जिसका पक्का इरादा हो और दिल मजबूत हो। जो यह इरादा लेकर मैदान में उतरता है कि मैंने यह काम करना है चाहे इसमें कितनी भी कठिनाईयाँ क्यों न आएं वह कामयाब हो जाता है, नहीं तो इस तरह होता है जैसे लोग उस पहलवान पर हँसते थे। पल्टू साहब कहते हैं:

***झूठ आशिकी करे मुल्क में जुत्ती खाहे।***

गुरु नानकदेव जी ने कहा था:

***दरवेशां दा जीवणां रूखां दी जीरांण।***

सन्तों के बिना संसार सूना नहीं रहता। परमात्मा अपने प्यारों को भेजता है। सन्तों का जीवन ऐसा होता है वे किसी खास फैमिली से बंधे हुए नहीं होते। गुरु नानकदेव जी ने सन्तों के दिल को एक पेड़ की तरह बयान किया है। जिसने पेड़ लगाया है वह पेड़ उसे छाया और अपना मीठा फल खिलाता है और जो उस पेड़ को काटने के लिए आता है उसे भी पेड़ अपना मीठा

फल खिलाता है और अपनी छाया देता है। सन्त संसार में किसी खास समाज या किसी खास परिवार के लिए नहीं आते, वे बहुत खुल्ला दिल लेकर आते हैं। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं वे उनसे फायदा उठा लेते हैं। उनके पास बेटा आए, पोता आए, भाई आए या संगत में से कोई सेवक या किसी भी समाज या मुल्क का आए उनका दिल सबके लिए खुला होता है। वे खुले दिल से अपनी दात लुटाते हैं, उनके दिल के अंदर किसी के लिए कोई ईर्ष्या या मनमुटाव नहीं होता। कबीर साहब कहते हैं, ''संसार तेर–मेर की जेवरी से बँधा हुआ है लेकिन सन्त आजाद होते हैं।''

इतिहास में आता है कि शिव और पार्वती एक पहाड़ पर अपना तप–अभ्यास कर रहे थे, वहाँ एक गरीब लकड़हारा भी घूम रहा था। पार्वती ने कहा, ''लोग आपको वरों का दाता कहते हैं यह ऐसी गरीब हालत में घूम रहा है, क्या आप इसे कोई वर नहीं दे सकते?'' शिव ने कहा, ''देख भोलिए! तुझे कर्मों की अघाद गति का पता नहीं, इसके कर्मों में माया का कोई सुख नहीं लिखा अगर इसके कर्मों में सुख होता तो यह हमें पहचान लेता कि जिस शिव की खातिर लोग समाधियाँ लगाते हैं वह मेरे पास ही बैठा है, यह बिना कहे ही फायदा उठा लेता।''

पार्वती ने कहा, ''अगर आप इसे माया दें तो यह फायदा उठाकर अच्छी जिंदगी बिता सकता है।'' शिव ने कहा, ''अच्छा ऐसा ही करते हैं।'' शिव ने वहाँ माया की कुछ थैलियाँ फैला दी। लकड़हारे के दिमाग में यह विचार आया कि अंधे कैसे चलते हैं, वह जब थैलियों के पास आया तो वह आँखें बंद करके वहाँ से गुजर गया। उस समय सोने–चाँदी की करन्सी होती थी। लकड़हारा आगे जाकर कहने लगा कि अंधों को तो बहुत तकलीफ होती होगी जैसी तकलीफ मुझे हुई मेरे पैरों में रोड़े चुभते रहे। फिर शिव ने पार्वती से कहा, ''अब तुझे समझ आई, रूपयों के ऊपर इसके पैर भी टिके इसे चुभे भी लेकिन यह पत्थर–रोड़े समझकर ही उनके ऊपर से गुजर गया।

इसी तरह सन्त–महात्मा के पास चाहे कोई भी जीव भाव या अभाव लेकर जाता है फिर भी महात्मा सच्चे दिल से चाहते हैं कि इसका सुधार हो इसे कुछ दें लेकिन हम सन्तों के पास जाकर भी अंधों की तरह आँखे बंद करके गुजर जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***बिन कर्मां कुछ पाया नाहीं, जीवों तेरा धावे।***

भाई लैहणा, मत्ते नांगे की सराय जिला फिरोजपुर में पैदा हुए। शुरु से ही आपका झुकाव परमार्थ की तरफ था। हम जिस समाज या कुल में पैदा होते हैं वहाँ जो रीति–रिवाज होता है, हमारा रुहानी जीवन वहीं से शुरु होता है। आपके माता–पिता ज्वाला देवी के उपासक थे। आप भी अपने माता–पिता के साथ देवी की यात्रा के लिए जाया करते थे। आप जत्थे के मुखिया बने, हर साल जत्थे के साथ यात्रा करने जाते थे।

एक बार आपका मिलाप गुरु नानकदेव जी के एक सेवक भाई जोधसिंह के साथ हुआ। जोधसिंह ने कहा, ''देख प्यारेया! जिस देवी की खातिर तू इतना आडम्बर करता है इतनी लम्बी यात्रा करता है क्या वह देवी तुझे कभी मिली?'' तूने ज्वाला जी काँगड़ा जाना है रास्ते में करतारपुर बेदियाँ गाँव पड़ता है उसे नानक तपा भी कहते हैं, प्यार से उनका कोई शिष्य उन्हें गुरु नानक भी कहता है। तू जाते हुए उनके भी दर्शन कर लेना, सतसंग सुन लेना। लैहणा एक सच्चा–सुच्चा आदमी था उसने सोचा ऐसा ही करूंगा।

जब वह काँगड़ा की तरफ जाते हुए गुरु नानकदेव जी के दर्शनों के लिए रूका, सतसंग सुना। वक्त आ चुका था, उसने पहचान लिया कि यह मेरा पुराना मिलापी है। भाई लैहणा रात को झाड़ू देने के लिए उठा कि इस महान सन्त की सेवा करूं। भाई लैहणा ने देखा कि वहाँ एक औरत झाड़ू दे रही थी। भाई लैहणा ने उस औरत से पूछा, ''तू कौन है?'' उस औरत ने कहा, ''तू जिसके दर्शनों के लिए जाया करता है मैं वही हूँ। मेरे पास लोग

बिमारियाँ लेकर आते है, भोगी आते हैं, शराबी–कबाबी आते हैं। मैं चाहती हूँ कि मैं किसी महात्मा की शरण में चली जाऊँ तो मेरा भी उद्धार हो जाएगा।''

आप जानते ही हैं अगर इंसान को सच्चाई मिल जाए तो उसे वहीं रूक जाना चाहिए, अंदर से डाँवाडोल फायदा नहीं उठा सकता। भाई लैहणा ने अपने साथियों से कहा, ''प्यारेयो! मेरी यात्रा यहाँ पूरी हो गई है, आप अपनी यात्रा में जाएं।'' लैहणा को गुरु नानकदेव जी की तरफ से सेवा करने का जो हुक्म मिलता वह वही करता था। वह कभी यह नहीं सोचता था कि इस सेवा से मेरे कपड़े खराब हो जाएंगे या मैं थक जाऊँगा या यह सेवा मेरे करने के योग्य नहीं। लैहणा हुक्म का पालन करना ही जानता था।

मैं बताया करता हूँ कि परमपिता कृपाल ने मुझसे पूछा, ''तूने कुछ कहना है?'' मैंने कहा, ''सच्चे पातशाह! मेरा दिल–दिमाग खाली है। मुझे पता नहीं कि मैंने आपसे क्या सवाल करना है?'' आपने हँसकर कहा, ''मेरे पास बहुत दुनिया है, मैं दिल–दिमाग खाली देखकर ही तेरे पास आया हूँ।''

इसी तरह गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा से पूछा, ''प्यारेया! तेरा क्या नाम है?'' उसने कहा, ''मेरा नाम लैहणा है।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''अच्छा भाई तूने लेना है तो हमने देना है।'' उस वक्त गुरु नानकदेव जी के साहबजादे भी पास ही खड़े थे। सन्तों की बात को समझना बहुत मुश्किल है। उनके दिमाग में यह बात आई कि शायद इनका रूपयों–पैसों का कोई लेना–देना होगा, व्यापार का कोई काम होगा।

इसके बाद गुरु नानकदेव जी ने कसौटी पर रख लिया कि संगत में से हुक्म का पालन करने वाला कौन है? कौन मेरी तालीम को सही अर्थों में आगे चला सकेगा क्योंकि गंदी जगह पर कुत्ता भी नहीं बैठता। 'पवित्र शब्द' साफ जगह देखता है कि कौन मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर आया है, कौन विषय–विकारों से बचा है कौन मेरी तालीम को समझता है?

महाराज कृपाल ने जातिय तौर पर मुझे बताया कि मेरा दिल नहीं करता था कि मैं संसार को अपना चेहरा दिखाऊँ लेकिन मैं गुरु का हुक्म मोड़ नहीं सका। महाराज सावन सिंह जी ने कहा था, ''देख कृपाल सिंह! मेरी तालीम गुम न हो जाए, थ्योरी समझाने वाले बहुत होंगे, नाम तवज्जो होती है।''

गुरु अंगद की कहानियों से तो बहुत इतिहास भरा पड़ा है लेकिन मैं आपको थोड़ा सा बताता हूँ। एक बार आप अपने खेत की मूँग या माँह की दाल उठाकर ले जा रहे थे। आज की तरह रेल गाड़ियो के साधन नहीं थे। करतारपुर बेदियाँ और खंडूर साहब का फासला सौ मील या उससे ज्यादा का था। जब आप दाल उठाकर ले जा रहे थे, रास्ते में एक घोड़े वाला मिला। उसने कहा, ''सरदार जी! आप मुझे अपना बोझ दे दें, आप चलकर आ जाएं।'' अंगददेव जी ने कहा, ''प्यारेया! यह बोझ मेरे ही उठाने के लिए है, मैं अपने गुरु के लंगर के लिए यह दाल लेकर जा रहा हूँ।''

वहाँ पहुँचकर आपने वह दाल गुरु नानकदेव जी की धर्मपत्नी माता सुलखणी को पकड़ा दी और पूछा कि गुरु साहब कहाँ हैं? माता सुलखणी ने कहा कि गुरु साहब खेत में कारोबार करवा रहे हैं। आप खेतो में गए, आप अच्छे परिवार के थे और आपने सुच्चा चोगा पहना हुआ था। वहाँ गुरु नानकदेव जी के बेटे श्री चंद और लखमीदास भी खड़े थे। गुरु नानकदेव जी ने अपने बेटो से पूछा क्या तुम पशुओं के लिए यह चारा लेकर जाओगे? आपके लड़कों ने कहा, ''हम आपके बच्चे हैं हम यह सामान उठाते हुए अच्छे लगेंगे? आप इसी से उठवाएं।''

आखिर गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा को पशुओं का चारा उठाने के लिए कहा। वह चारा कीचड़ से भरा हुआ था। भाई लैहणा चारा लेकर घर पहुँचे तो उनके सारे कपड़े खराब हो चुके थे। गुरु नानकदेव जी की धर्मपत्नी ने कहा कि आपको काम लेने की समझ नहीं कि किससे क्या काम लेना

है? इस सरदार ने इतने अच्छे कपड़े पहन रखे थे आप यह बोझ किसी और से उठवा लेते इसके सारे कपड़े खराब हो गए हैं। गुरु नानकदेव जी ने हँसकर कहा, ''भलिए लोके! तू इससे पूछ यह कितना खुश है, यह कीचड़ नहीं केसर है, इसके कितने कर्मों का बोझ उतर गया है।''

श्री चंद गुरु नानकदेव जी का बड़ा लड़का था उसने उदासी मत चलाया। बाबा बिशनदास जी इसी संप्रदाय के साधु थे। श्री चन्द को 'दो–शब्द' का भेद था। श्री चन्द ने गुरु नानकदेव जी से नाम नहीं लिया था अविनाशी मुनि को गुरु धारण किया था। लखमीदास गृहस्थ में रहा।

**कोई वाहे को लुणै को पाए खलिहानि।।**
**नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि।।**

गुरु नानकदेव जी महाराज अपनी धर्मपत्नी से कहते हैं, ''देख प्यारिए! तुझे पता नहीं कि गद्दी का वारिस किसने बनना है, परमात्मा गद्दी किसे देना चाहता है? गद्दी किसी की विरासत नहीं। कोई जमीन पर हल चलाता है, कोई बीज बीजता है, कोई उसे काटता है लेकिन यह पता नहीं कि इसे किसने खाना है। इसी तरह गद्दी का फैसला, संगत की अगुवाही करने का अधिकार किसे देना है यह फैसला परमात्मा की दरगाह में होता है।'' महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर सतसंग में बताया करते थे:

***वैद्य वकील सन्त सरदारे पिंड विच मान न पौंदे चारे।***
***नानक दादक ते घरवाली ऐह वी रहण साध तो खाली।।***

**जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ।।**
**नानक जो भावै सो होइ।।**

सन्त–महात्मा तो हर एक को तहेदिल से देना चाहते हैं लेकिन कोई भाग्यशाली जीव ही उनके वचनों को मानता है। जिसके मन में महात्मा का स्वरुप घर कर जाता है वह तर जाता है और अपने संगी–साथियों को भी

तार देता है। जिन महात्माओं ने कमाई की, अपने गुरु का हुक्म माना उनके कलाम पढ़ने से हमें पता लगता है कि गुरु–पीरों की चाकरी कितनी मुश्किल होती है। हमारे और गुरु के दरम्यान मन दीवार बनकर खड़ा हो जाता है, इन्द्रियों के भोग नीचे की तरफ खींचते हैं इसलिए रातों को जागना मेहनत करना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं होता। मन के साथ मुकाबला करना बहुत कठिन काम है।

जानवरों का एक बहुत बड़ा झुंड जा रहा था, एक महात्मा भी चले जा रहे थे। एक आदमी ने महात्मा से कहा, महात्मा जी देखें! कितना बड़ा झुंड जा रहा है। महात्मा ने कहा कि इसमें तेरा कितना सामान है? उसने कहा कि इसमें मेरा अपना तो कोई नहीं मेरे ताऊ का एक बछड़ा है। हमारी भी यही हालत है। आमतौर पर हम देखते हैं कि यहाँ बहुत भीड़ है, यहाँ बहुत अच्छे लैक्चर करने वाले है, यहाँ बहुत अच्छे इंतजाम हैं, बहुत अच्छे मकान हैं। अगर हम उनसे सवाल करें कि इसमें तेरा कितना सामान है? फिर हम कहते हैं कि इसमें हमारा तो कुछ नहीं। महाराज सावन सिंह जी के कहने का यही भाव होता था कि हमें अपने मुत्तअल्लिक देखना चाहिए कि हमारी रूहानियत में कितनी चढ़ाई है, हमारा कितना हिस्सा है?

## पारब्रहमि दइिआलि सागरु तारिआ।।

जिस पर गुरु खुश है उस पर पारब्रह्म परमात्मा भी खुश है। एक जीव को तारना क्या मुश्किल है वह संसार समुंद्र के अनेकों डूबते हुए जीवों को किनारे लगा देता है, वह बहुत दयालु होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*जो बोले पूरा सतगुरु सो परमेश्वर सुणया।*
*सोई वरतया जगत में घट घट में लुणया।।*

## गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ।।

हम आमतौर पर कह देते हैं कि गुरु भाग्य से मिलता हैं लेकिन मैं यह भी कहा करता हूँ कि गुरु को भी शिष्य भाग्य से ही मिलता है। शिष्य का मिलना कोई छोटी सी बात नहीं। प्यारेयो! हम सब शिष्य हैं हम सबको उस दयालु कृपाल ने तारना है लेकिन बहादुरी उन्हीं की है जो जीते जी उसे खुश कर ले। गुरु ने हमें तालीम दी है कि हम जीते जी मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर गुरु को अपने अंदर प्रकट कर ले। जब पूरा गुरु मिल जाए और वह हो भी मेहरबान फिर भी अगर शिष्य गुरु के रास्ते को छोड़कर भटक जाए तो आप सोचकर देख सकते हैं उसने गुरु को कितना समझा?

महाराज कृपाल सदा यही कहते रहे, ''हमें मजबूत बनना चाहिए, हमारा इरादा पक्का होना चाहिए। जब गुरु को पकड़ लिया है तो उसे समझना भी है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए कि मक्का गए तो मक्कादीन और गंगा गए तो गंगाराम बन गए।''

## काम क्रोध बिकरालु दूत सभि हारिआ।।

जब गुरु मिलता है हमें नाम देता है तो हम कमाई करते हैं। अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर अंदर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो हमें तंग करने वाले पाँचों चंडाल काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हार मान जाते हैं। ये पाँचों चंडाल हाथ बाँधकर एक–एक करके हमारे अंदर से निकल जाते हैं।

## अंमृत नामु निधानु कंठि उरि धारिआ।।

जहाँ जहर था वहाँ अमृत आ जाता है। जहाँ रोजाना हमारे अंदर विषय–विकारों के झोंके उठ रहे होते हैं वहाँ नाम का खजाना टिक जाता है। नाम का भरपूर खजाना मिल जाता है। जब हमें पौंड या डॉलर मिल जाते हैं तब हमारा ख्याल कौड़ियों की तरफ जाने से अपने आप ही हट जाता है।

## नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ।।

साधुओं की संगत से हमारा यह फायदा होता है कि हमारी आत्मा को जो जन्म–मरण का रोग लगा हुआ है वह खत्म हो जाता है। सतगुरु इतना मेहरबान हो जाता है कि वह अपने बच्चे को सच्चखंड के तख्त पर बिठाकर खुश होता है। वह कहता है, ''आजा प्यारेया! मैं तुझ पर बहुत खुश हूँ।''

अंदर जाकर देखें कि गुरु कितना मेहरबान होता है और गुरु हमें कौन सी चीज देना चाहता है। अफसोस की बात है कि हम इतने मेहरबान गुरु के दरबार में जाकर सच्चखंड नहीं माँगते, गुरु नहीं माँगते, कौड़िया ही माँगते हैं। ये कौड़ियाँ हमने यहीं छोड़ जानी है। जब जन्म होता है तन पर कपड़ा नहीं होता, जब संसार से जाते हैं तब भी नंगे जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते है:

***जाका हुक्म दरगाह चले सो किसको नदर न आवे तले।***

जिसकी दरगाह में पहुँच है वह जब आँखें बंद करता है तो मालिक के दरबार में है, जब आँखें खोलता है तो दुनिया में है। वह कभी भी दुनिया की चापलूसी नहीं करता क्योंकि वह अपने गुरु परमात्मा की चापलूसी करता है।

गुरु नानकदेव जी ने हमें इस छोटे से शब्द में समझाया है कि हमनें भजन–अभ्यास करने के लिए बैठना है न कि तजुर्बे करने के लिए बैठना है। हमें गुरु की शरण में अपनी आत्मा का रोग दूर करने के लिए आना चाहिए न कि दुनिया की मान–बड़ाई या दुनिया की वस्तुएं माँगने के लिए आना है।